

(आर्या)

तव पद मेरे हिय में, मम हिय तेरे पुनीत चरणों में।
तब लौं लीन रहों प्रभु, जब लौं पाया न मुक्ति-पद मैंने॥
अक्षर पद मात्रा से दूषित, जो कछु कहा गया मुझसे।
क्षमा करो प्रभु सो सब, करुणाकरि पुनि छुड़ाहु भव दुख से।
हे जगबन्धु जिनेश्वर! पाऊँ तव चरण-शरण बलिहारी।
मरण समाधि सुदुर्लभ, कर्मों का क्षय सुबोध सुखकारी॥

(नौ बार णमोकार मंत्र का जाप करें।)

(क्षमापना)

(दोहा)

बिन जाने वा जान के, रही टूट जो कोय।
तुम प्रसाद तैं परम गुरु, सो सब पून होय॥१॥
पूजन-विधि जानूँ नहीं, नहिं जानूँ आह्वान।
और विसर्जन हूँ नहीं, क्षमा करहु भगवान॥२॥
मन्त्रहीन धनहीन हूँ, क्रियाहीन जिनदेव।
क्षमा करहु राखहु मुझे, देहु चरण की सेव॥३॥
तुम चरणन ढिंग आयके, मैं पूजूँ अति चाव।
आवागमन रहित करो, मेटो सकल विभाव॥४॥

नाथ तुम्हारी पूजा में सब, स्वाहा करने आया।
तुम जैसा बनने के कारण, शरण तुम्हारी आया॥टेक॥
पंचेन्द्रिय का लक्ष्य करूँ मैं, इस अग्नि में स्वाहा।
इन्द्र-नरेन्द्रों के वैभव की, चाह करूँ मैं स्वाहा।
तेरी साक्षी से अनुपम मैं यज्ञ रचाने आया॥१॥
जग की मान प्रतिष्ठा को भी, करना मुझको स्वाहा।
नहीं मूल्य इस मन्द भाव का, व्रत-तप आदि स्वाहा।
वीतराग के पथ पर चलने का प्रण लेकर आया॥२॥
अरे जगत के अपशब्दों को, करना मुझको स्वाहा।
पर लक्ष्यी सब ही वृत्ती को, करना मुझको स्वाहा।
अक्षय निरंकुश पद पाने और पुण्य लुटाने आया॥३॥
तुम हो पूज्य पुजारी मैं, यह भेद करूँगा स्वाहा।
बस अभेद में तन्मय होना, और सभी कुछ स्वाहा।
अब पामर भगवान बने, यह सीख सीखने आया॥४॥